तर्ज--चल उड़ जा रे पंछी

उठ जाग ऐ रूह मेरी
तुझे पिउ ने जगाया है

1--बहुत गमाये दिनड़े तूने, गल गल के गफलत में
बक्त गुजारा सारा अपना, तूने इस नफरत में
कब जागेगी उठ के अब तू, अपनी उस खिलवत में
कायम तेरा ठौर ठिकाना, तुझको बतलाया है

2-भूल जा अब ये कुटम्ब कबीले जिनका रूप है सपना
गरज के मारे तेरे बने है , मतलब इनको अपना
कौन तुझे वो डगर दिखाये, जिसमे तेरा भला है
तूने अपना आप है पाना, कोई न संग चला है

3--तुझको साँचा साहेब मिलया, तेरा प्राण प्यारा
जामे वाहेदत देते, तूने संग झूठो का किया है
ऐसी बनी कोई तुझपे, तूने उनसे ना कुछ लिया है
क्या बतलाएगी तूने, ये जीवन कैसा जिया है

Nijanand App